जकारिया नायक के कुतर्कों का भंडाफोड़

जकारिया नायक इस्लाम के प्रसिध्ध विद्वान् और प्रचारक हैं, उनके प्रोग्राम अक्सर टी वी पर आते हैं | नायक जब भी अपना कार्यक्रम आयोजित करते हैं, तो उनके कार्यक्रम में कुछ हिन्दू भी चले जाते हैं| जिन्हें न तो इस्लाम के बारे में पूरा ज्ञान होता है न हिन्दू धर्म का | वे सिर्फ नायक की लच्छेदार बातें सुनने को जाते हैं, नायक बीच बीच में कुरआन की आयतें, उनके नंबर, सूरा का हवाला देकर अपनी विद्वत्ता जताता है| ताकि लोग प्रभावित हो जाए | शायद बहुत कम लोगों को पता होगा कि शैतान को भी इस्लाम का पूरा पूरा ज्ञान है | एक बार जब किसी हिन्दू ने नायक से पूछा कि आप वन्देमातरम का विरोध क्यों करते हैं | तो उसने जो जवाब दिए हम उन पर विस्तार से आगे बताएँगे :-

लेकिन ताज्जुब की बात यह है कि, मुसलमान जन गणमन का विरोध नहीं करते, जबकि सब जानते हैं कि यह गाना इंगलैंड के सम्राट की स्तुति में लिखा गया था और इस्लाम में अल्लाह के अलावा किसी और की स्तुति करना शिर्क है| मुसलमान जन गण मन का विरोध इसलिए नहीं करते, क्योंकि उन्हें डर है कि वे देशद्रोही घोषित न हो जाएँ और उनकी सुविधाओं में कटौती न हो जाए

वह सिर्फ वन्देमातरम का विरोध इसलिए करते हैं कि वे जानते है कि हिन्दू अपने देश का आदर करते हैं और उस से प्रेम करते है |

जैसी कि इस्लाम की नीति है कि मुसलमान जानबूझ कर वही काम करें जिस से हिन्दुओं को तकलीफ हो |

कुरआन में है कि-

तुज़क्किरू लिल्लाह कसीरा लौ करिहल काफिरून :यानी ऐसे काम करो जिस से काफिरों को संताप हो |

नायक ने वन्देमातरम न पढ़ने का कारण बताते हुए कहा कि मुसलमान तौहीद यानी एकेश्वरवाद में विश्वास रखते हैं और सिर्फ अल्लाह की इबादत करते हैं, अल्लाह के अलावा किसी की स्तुति करना, पूजा करना, वन्दना करना या किसी को अल्लाह के बराबर मानना या किसी का नाम अल्लाह के शामिल करना शिर्क है जो अल्लाह कभी माफ़ नहीं करेगा इसीलिए मुसलमान वन्देमातरम नहीं गाते हैं

मुसलमानों का यह तौहीद इनके कलमा से प्रकट होता है, कलमा मुसलमानों का मूल मन्त्र है इसमे दो पंक्तियाँ हैं -

ला इलाह इल्लल्लाह - मुहम्मदुर रसूलुल्लाह :

इसमे पाहिले दो शब्द "**ला इलाह** "का अर्थ है **कोई माबूद नहीं है** यानी कोई खुदा नहीं है, यह सरासर कुफ्र है |

दूसरी पंक्ति में अल्लाह के साथ मुहम्मद का नाम शामिल किया गया है जो शिर्क है केवल मुसलमान तौहीद को नहीं मानते, यहूदी और ईसाई भी तौहीद को मानते हैं लेकिन उन्हों ने अपने कलमों में अपने धर्म स्थापकों के नाम नहीं जोड़े |

देखिये यहूदियों का कलमा "**शेमा इस्राएल अदोनाय एलोहेनू अदोनाय एहाद "तौरेत -इस्तासिना ६:४ |**

इसी तरह ईसाईयों का कलमा '**क्रेडो देउस नोस्तेर दोमिनुस ऊनुस एस्त'लेटिन मिस्सल पेज २३६ |**

मुसलमान यहाँ तक नहीं रुके शिया लोगों ने एक तीसरी लाइन भी जोड़ ली "**अलीयुन वलीउल्लाह" |**

फिर नायक हिन्दुओं को शिर्क करने वाले या मुशरिक क्यों कहता है ?

अगर किसी यहूदी या ईसाई पूछा जाए तो वह सारेमुसलमानों को मुशरिक बता देगा क्योंकि यहूदी और ईसाई खुदा के साथ अपने कलमों में मूसा या ईसा का नामनहीं जोड़ते हैं, कुरआन में भी कलमा इसी रूप में नहीं है |

बी एन शर्मा